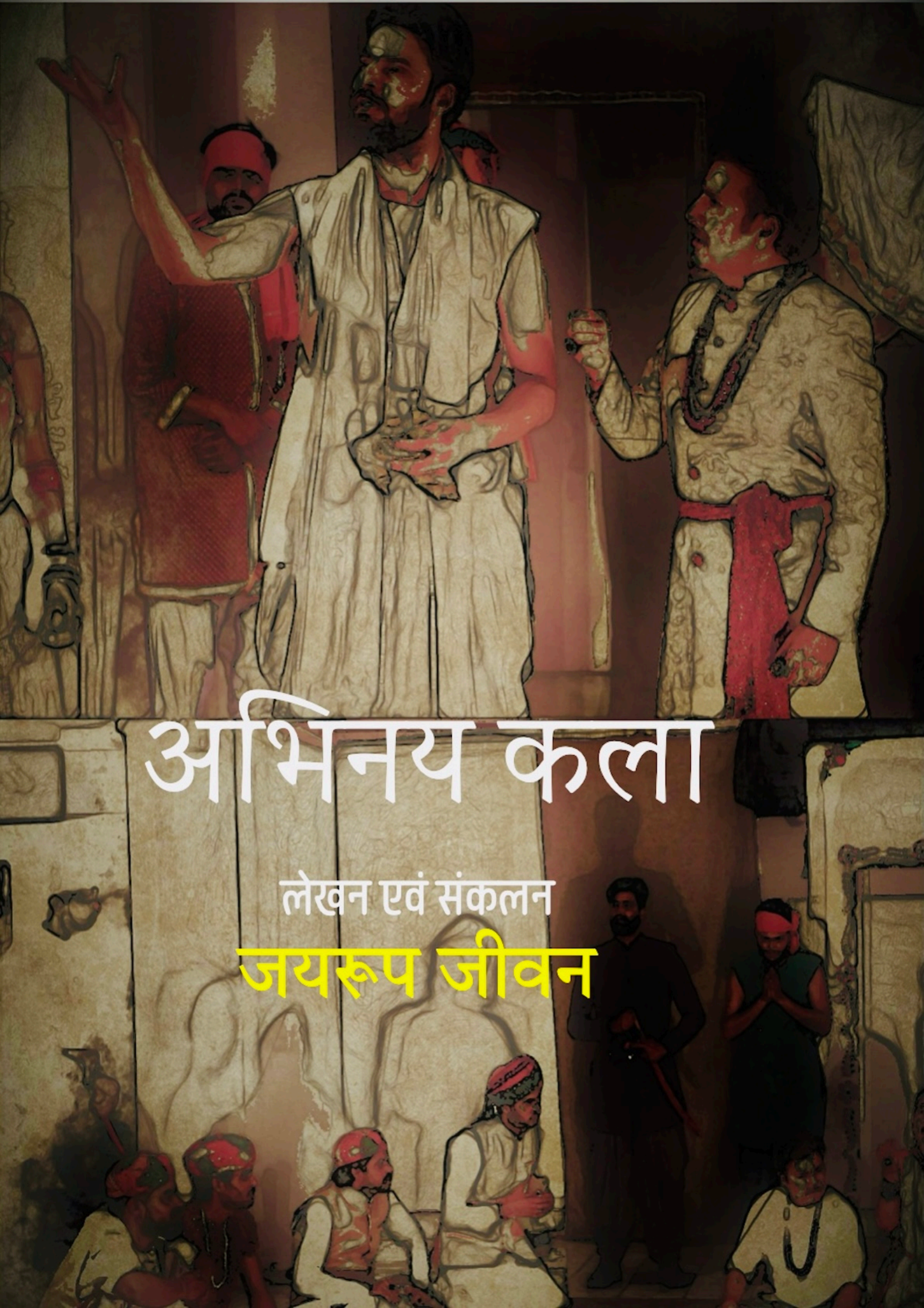

अभिनय कला

लेखन एवं संकलन

जयरूप जीवन

अभिनय कला

लेखन एवं संकलन

जयरूप जीवन

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जून, 2024

© जयरूप जीवन

इस पुस्तक के विषय में:

फिल्मों की बात करें तो 1930-40 तक शुरूआती दौर था; साउंड रिकॉर्डिंग, बैक-ग्राउंड का काम या डबिंग नहीं होती थी और एडिटिंग भी बाद में आई। इसी तरह रंगमंच भी अभिनेताओं की अपनी आवाज़, सुरताल की पकड़ और नाचने की क्षमता पर निर्भर होता था।

इसलिए पिछली शताब्दी के मध्य तक अधिकांशतः अभिनय का अर्थ रहा है- नाचना, गाना एवं संवादों की अदायगी, अर्थात एक अभिनेता का तीनों कलाओं में दक्ष होना। किन्तु आज के आधुनिक जगत् में विकसित तकनीक, साधनों की बहुलता और स्पेशिअलाईज़ेशन आदि कारणों से नृत्य, संगीत एवं अभिनय का वर्गीकरण हो चुका है।

अब आवश्यक नहीं है कि एक अभिनेता को गाना आता हो, अगर आता है तो ये उसका अतिरिक्त गुण है वर्ना आवश्यकता होने पर किसी और की आवाज़ बैकग्राउंड में डाल दी जाती है। नृत्य के लिए नृत्य-निर्देशक अभिनेता के स्वभाव और गुण के अनुसार उसकी तैयारी में मदद करते हैं।

लेकिन नृत्य, संगीत एवं अभिनय के विभागीकरण के कारण अब एक अभिनेता को अभिनय के लिए पहले से अधिक गहराई में काम करना होता है। किसी भी विषय की सीमा...और उसकी रचनात्मक छूट को समझ लेने से ही एक कलाकार में आत्मविश्वास पैदा होता है जो बहुत आवश्यक है।

इस पुस्तक को लिखने में प्रयास रहा है कि विषय को छोटे-छोटे अध्यायों में बाँटकर,

सांकेतिक तरह से ऐसे रखा जाये कि पढ़ने और समझने में आसानी हो, विषय बोझिल ना होकर रुचिकर बना रहे।

अभिनय के मुख्य बिन्दुओं को जान लेने पर, उसके विस्तार में जाना, और जानना अभिनय अभ्यास के दौरान हो सकता है। वस्तुतः अभिनय, पढ़ने की नहीं करने की कला है।

शुरु के अध्यायों में अभिनय के मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को आसान करके रखने की कोशिश की गई है। उसके बाद प्रायोगिक एवं सैद्धान्तिक पक्ष तथा बीच-बीच में आवश्यक तकनीकी जानकारी के अध्याय रखे गये हैं।

अभिनय से सम्बन्धित नाट्य-शास्त्र के कुछ हिस्से, जो आज भी उतने ही महत्व के हैं, रखे गये हैं। साथ ही कुछ प्राथमिक महत्व के हिस्से "वास्तविक अभिनय" के प्रणेता स्तानिस्लावस्की के सिद्धान्तों से लिये गये हैं, एवं कुछ हिस्से पश्चिमी आधुनिक अभिनय सिद्धान्तों से लिये गये हैं।

अन्य कई भारतीय पुस्तकों से भी थोड़े-थोड़े ऐसे अंश लिए गये हैं जो पुस्तक के अध्यायों को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक जान पड़ रहे थे।

इस पुस्तक का **उद्देश्य** है- अभिनय के विभिन्न पक्षों की प्रारम्भिक (आधारभूत) जानकारी को सरल तरीके से सामने रखना। अभिनय के सिद्धांतों पर कई विशेषज्ञों की बहुत अच्छी-अच्छी पुस्तकें उपलब्ध हैं। परन्तु सरल तरीके से अभिनय के विभिन्न पक्षों की जानकारी संक्षेप में, विशेषकर हिंदी में, उपलब्ध नहीं होने के कारण ही इस पुस्तक की परिकल्पना उपजी।

अभिनय बहुपक्षीय कला है। इसलिए इसको कई तरफ से समझने की आवश्यकता होती है। कोई भी एक परिभाषा, अभिनय को पूरी तरह से बांध या समझा नहीं सकती है।

अभिनय कला अलग-अलग मौक़ों पर, अपने अलग-अलग पक्षों को अलग-अलग परिभाषाओं में प्रकट करती है। यही इसकी वृहत्तता है।

एक सम्मानित कवि की ये चार पंक्तियाँ सटीक हैं यहाँ :

अपने प्रारंभ में उतनी नहीं

जितनी अपने अंत में होती है नदी...

शुरू में एक बूँद

और अंत में पूरा समुद्र

मैं राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के पूर्व-निदेशक और मेरे शिक्षक श्री देवराज अंकुर जी का आभारी हूँ जिनकी प्रेरणा से इस पुस्तक को आगे बढ़ाने में मुझे मदद मिली।

कुछ सुधार और नए अध्यायों के साथ इस पुस्तक का ये दूसरा संस्करण प्रस्तुत है।

आशा है कि नवोदित अभिनेताओं के साथ साथ ये पुस्तक कुछ-कुछ अनुभवी अभिनेताओं के लिए भी लाभदायक रहेगी। किन्तु अंततः अपनी कड़ी मेहनत और गहरी लगन ही रंग उभार कर लाती है। मेहनत का कोई विकल्प नहीं है। हाँ, साथ में भी प्रखर बुद्धि भी हो तो चार चाँद लग जाते हैं। अभिनय क्षमता मेहनत और समय के साथ निखरती है।

जयरुप जीवन

अध्याय

अभिनय है आसान	8
अभिनय के चमत्कार	12
अपने-आपको देखें	14
दूसरों को भी देखें	17
अभिनेता का पहला अस्त्र: शरीर	20
अभिनेता का दूसरा अस्त्र : भाषा	31
ध्वनि	35
ध्वनि-व्यायाम	38
संवाद - अदायगी	42
व्यक्तित्व निर्माण	53
मंच	58
परकाया प्रवेश	60
अभिनय के माध्यम	62
कला, कुशलता और अनुकरण	67
कलाकार का मुख्यधर्म	69

अभिव्यक्ति 76

रस 79

अभिनय के अंग 84

वाचिक-अभिनय 91

आहार्य अभिनय 97

सात्विक अभिनय 101

चरित्र वर्गीकरण 104

नायक के प्रकार 105

नायिका के प्रकार 109

रंगमंच- शब्दावली 111

दूसरों की रिहर्सल देखें 117

रचनात्मक भाषा 120

नाटकीय तत्व 122

भावनायें 124

अहं (ईगो) 128

अभिनय का मैं 130

फिल्म - शब्दावली 135

कुछ महत्वपूर्ण संकेत :

- *कला जगत में अचानक कोई चमत्कार नहीं होता।*
- *एक अच्छी कला या अच्छे कलाकार के प्रकाश में आने से पहले, उसके पीछे उसकी अथक मेहनत छुपी होती है।*
- *आवश्यक नहीं कि आप पूरी किताब एक बार में पढ़ें। ये किताब टुकड़ों-टुकड़ों में कई दिनों में पढ़ी जा सकती है।*
- *अगर आपका अभिनय में कोई अनुभव नहीं है तो सबसे पहले शुरु के छोटे-छोटे चार अध्याय अवश्य पढ़ें।*

...

सावधान

ये पुस्तक सरल एवं संक्षिप्त, किन्तु सघन और गहन है |

आराम से रुक रुक कर पढ़ें, बहुत कुछ मिलेगा |

...